Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

मीत साहित्य और गीत संगीत

DR. RAVINDER KUMAR

V.P.O Siwani Bolan, Teh and district Hisar

सार

प्रस्तुत शोध आलेख में साहित्य और संगीत के अर्थ को स्पष्ट करते हुए साहित्य और संगीत के नैसर्गिक सम्बन्ध के विषय में बताया गया है। साहित्य और संगीत का मूल एक ही है और इसके विभिन्न प्रमाण हमें हमारे शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होते हैं। जीवन में साहित्य और संगीत के महत्व को दर्शाते हुए प्रस्तुत आलेख में दोनों के अंतर्सम्बन्धों की जड़ों को खोजकर उनके व्यवहारिक परिदृश्य को स्पष्ट करने के प्रयास किये गए हैं। जहाँ तक साहित्य की बात है तो यह मात्र संगीत को आधार ही प्रदान नहीं करता बल्कि संगीत के माध्यम से साहित्य को भी स्थायित्त्व प्राप्त होता है। भारतीय सिनेमा जगत इसका जीता जगता प्रमाण है जहाँ हजारों ऐसे गीतों को संगीतबद्ध किया जा चुका है जिनका आधार साहित्यिक रचनायें हैं। इस प्रकार साहित्य और संगीत के अंतर्सम्बन्धों की कड़ियों को इस आलेख में प्रस्तुत करने के प्रयास किये गए हैं।

शोध-विधि: प्रस्तुत शोध-पत्र में तथ्यात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक का प्रयोग किया गया है।

कुंजी शब्द: भारतीय संगीत, पाश्चात्य संगीत, रसोत्पति, नाद प्रधान गीत और गीत शब्द प्रधान।

भूमिका

भारतीय साहित्य में हमें साहित्य और संगीत का अटूट सम्बन्ध देखने को मिलता है। विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के एक हाथ में वीणा तो दूसरे हाथ में पुस्तक है अतरू दोनों का गहरा सम्बन्ध है। जब शब्द, धुन अच्छे होते हैं तो उस पर आधारित संगीत भी बेहतरीन बन जाता है। सदाबहार संगीत वही होता है जिसका साहित्य मजबूत होता है। वास्तव में साहित्य जहाँ संगीत को आधार प्रदान करता है तो वहीं संगीत साहित्य को चिरायु बना देता है। हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में तो साहित्य और संगीत के समन्वय का एक संयुक्त आयाम स्पष्ट रूप में सामने आता है:

"गीतं वाद्य तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते"

ये पंक्तियाँ साहित्य और संगीत के संबंध को यथार्थ रूप से स्पष्ट करती हैं। शब्द के बिना स्वर और स्वर के बिना शब्द अधूरा है। दोनों का सम्मिलन ही उन्हें पूर्ण करता है। सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई आदि तमाम भक्त कवियों के काव्य में हम संगीत और साहित्य का सीधा जुड़ाव देख सकते हैं।

संगीत के विषय में कहा गया है कि संगीत हृदय का साहित्य होता है। इसका प्रारम्भ वहाँ होता है, जहाँ पर शब्द समाप्त हो जाते हैं। मनुष्य सदा से ही अपने भावों की स्वरबद्ध अभिव्यक्ति करता रहा है। जहाँ मनुष्य अपने सुप्त मनोभावों को स्वर देता है वहीं से संगीत विधा का उद्भव होता है। साहित्य भी सर्वप्रथम सबसे पहले भावों की लिखित या मौखिक अभिव्यक्ति है। साहित्य के अर्थ की जहाँ तक बात है तो साहित्य के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अनेक परिभाषाएं दी हैं जैसे शब्दार्थौ सहितं काव्यमं, "वाक्यम रसात्मक काव्यम्" अर्थात सुरों के द्वारा अर्थ के साथ रसिकों तक पहुँचने वाला रसात्मक वाक्य ही साहित्य है। साहित्य और संगीत दोनों ही संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। भारतीय शास्त्रों में संगीत व उससे सम्बन्धित विषय-सामग्री सर्वप्रथम हमें भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में प्राप्त होती है। भर्तृहरि कृत नीति शतकम् में संगीत और साहित्य के महत्त्व को लेकर एक अत्यंत प्रसिद्ध उक्ति है कि

"साहित्य संगीत कला विहिनः कला शाकशात पशु पुच्छं विषाणहीन"

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

अर्थात् साहित्य, संगीत से विहिन मनुष्य पशु के समान होता है। भारतीय जीवन के पग दृ पग में संगीत व्याप्त है। ध्रुपद गायकी, ठुमरी, दादरा, कजरी चैती, होरी बारहमासा जैसी साहित्यिक प्रकार की गायकी में ख्याल गायकी आदि के रूप में जन्म से मृत्यु तक प्रत्येक त्यौहार, प्रार्थना, उत्सव में संगीत मनुष्य का साथी रहा है। संगीत के साधन हैं स्वर, लय और ताल तथा साहित्य के साधन हैं शब्द और अर्थ। एक ओर संगीत साहित्य के अर्थ को व्यक्त करने में सहायक होता है दूसरी ओर साहित्य संगीत के रूप को व्यक्त करने में सहायक होता है। "पाश्चात्य विद्वान कांरलाइन के अनुसार -संगीत में विचार ही काव्य है कविता मनोवेगपूर्ण और संगीतमय भाषा में मानव अंतःकरण की मूर्त तथा कलात्मक व्यंजना करती है।

अल्फ्रेड ऑस्टिन के कथानुसार संगीत से रहित तथा अर्थ की रमणीयता से विहीन शब्दाडम्बर को कविता नहीं कहा जा सकता। फूलर के मतानुसार काव्य को शब्दों के रूप में संगीत तथा संगीत को ध्वनि के रूप में कविता कहा जा सकता है।"

गीतों में शब्द ही भाव प्रकटीकरण के मूल आधार हैं क्योंकि संगीत में सुरों के साथ-साथ भाषा या साहित्य का भी उतना ही महत्व है। वास्तव में संगीत और साहित्य के परस्पर संबंध अत्यंत प्राचीन हैं। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ साहित्य और संगीत का भी विकास होता रहा। साहित्य ने सदैव ही संगीत के जीवन को स्थायित्व प्रदान किया है। हजारों फ़िल्मी गीत इसी का उदहारण हैं। जिनके बोल पहले लिखे गए और फिर उन्हें स्वर लहरियों के रूप में वाद्ययंत्र की सहायता से कंठ के द्वारा संगीत के रूप में व्यक्त किया गया। साहित्य और संगीत वाणी के ही दो प्रकार हैं एक में शब्दों की प्रधानता है तो दूसरे में स्वरों की। संगीत का अस्तित्व अनादिकाल से विद्यमान है इसलिए हर युग के साहित्य में संगीत स्वतः समाहित होता रहा है।

यद्यपि संगीत एक स्वतंत्र कला है तथापि जब वह साहित्य के सम्पर्क में आता है तो उसका उत्कर्ष और भी बढ़ जाता है इसका उदाहरण हम हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में देख सकते हैं। संगीत और साहित्य दोनों का उद्देश्य वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक उत्थान करना है। यदि भिन्न-भिन्न गेय पदों की रचना साहित्य में न की गई होती तो संगीत में भिन्न-भिन्न गीत शैलियां देखने को नहीं मिलती। उदाहरण के लिए ध्रुवपद, धमार, ख्याल, टप्पा और ठुमरी आदि गीत शैलियों का निर्वाह तभी हो सकता है जब उनके अनुकूल पद लिखे जाये। ख्याल टप्पा और ठुमरी गीत शैलियों में शृंगार और करुण रस आधारित होती हैं अतरू इनके लिए श्रंगार और करुण आदि रस आधारित काव्य साहित्य का सृजन आवश्यक है। संगीत के द्वारा रसोत्पत्ति में काव्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि यदि राग का रस भिन्न हो और गेय पदों में वर्णित रस भिन्न हो, तो ऐसी दशा में अनुकूल रस की उत्पत्ति के विपरीत विरुद्ध रस की उत्पत्ति होगी।

संगीत और साहित्य दोनों ही मनुष्य के भावों को व्यक्त करने के महत्वपूर्ण माध्यम है। संगीत नादप्रधान गीत और गीत शब्द प्रधान संगीत है। संगीत मात्र मनोविनोद तक ही सीमित विधा नहीं है बल्कि परम सुख प्रदाता भी है। भक्तिकाल का साहित्य इस तथ्य की पुष्टि करता है। सूर, तुलसी, मीरा, आदि सभी भक्त कवियों के पदों में गेयता का गुण है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेंदर प्रसाद के अनुसार हमारे साधु संतों की संगीत -साधना का ही यह प्रभाव था कि कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, तुकाराम, नरसी मेहता ऐसी कृतियाँ कर गये जो हमारे और संसार के साहित्य में सर्वदा ही अपना विशिष्ट स्थान रखेगी।

साहित्य की भांति संगीत का अपना इतिहास है। समय- समय पर संगीत और साहित्य दोनों को राजाश्रय मिलता रहा है। द्रुपद गायकी से प्रारम्भ होकर संगीत की धारा आज के आधुनिक गीतों तक पहुंच चुकी है। और विभिन्न कालों में साहित्य के रसानुसार ही श्रेष्ठ संगीत का निर्माण भी होता रहा है। चाहे कालिदास कृत मेधदूत, कुमारसंभव, ऋतुसार, रघुवंश हो, जयदेव कृत गीतगोविन्द, तुलसीदास कृत रामचरितमानस, गीतावली, सूरदास कृत सूरसागर हो, या फिर आधुनिक युग के कवियों की रचनाओं में संगीत व साहित्य का श्रेष्ठ समायोजन होता हुआ दिखता है। भक्तिकाल के सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास, मीराबाई आदि भक्त कवियों के पद आज भी गाये जाते हैं। वास्तव में सभी सगुण और निर्गुण भक्त कवियों के पद गेय हैं। हमारे भारत वर्ष में संगीत का

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

इतिहास वृंदावन में हरिदास जी से शुरू होकर तानसेन और उनके आगे भी बेहतर संगीतकारों के बीच से होकर आगे बढ़ा है। सूर, तुलसी, कबीर, मीरा आदि की रचनाओं का संगीतमय गायन भजन प्रारम्भ से ही हो रहा है। यह तथ्य भी महत्त्वपूर्ण है कि भक्तिकालीन कवियों से ही भजन की परंपरा और ग़ज़ल की परंपरा दरबारी संगीत से शुरू हुई थी। बंगला के महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर और तमिल के महाकवि सुब्रमण्यम् भारती के हजारों गीत संगीतबद्ध किए जा चुके हैं। हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में देशभक्ति के गीतों की एक विशेष परंपरा को देखा जा सकता है, जिसमें मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, सुभद्राकुमारी चैहान, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी आदि कवियों की रचनाओं को संगीतबद्ध किया गया। हिंदी साहित्य के छायावाद के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद की काव्यरचना 'कामायनी' के निर्वेद सर्ग के एक गीत 'तुमुल कोलाहल कलह में, मैं हृदय की बात रे मन' को संगीतकार जयदेव ने सन् 1971 में आशा भोंसले की आवाज़ में रिकॉर्ड किया था। हरिवंशराय बच्चन के खंडकाव्य 'मधुशाला' को जयदेव ने ही 1973 में संगीतबद्ध किया था जिसे मन्ना डे ने अपनी आवाज़ दी थी।

उसके बाद 1980 में जयशंकर प्रसाद का गीत 'बीती विभावरी जाग री' को जयदेव ने 'कश्मीर की नाइटिंगेल' कही जाने वाली गायिका सीमा सहगल से गवाया था। इसी वर्ष उन्होंने महाकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'उर्वशी' के एक अंश 'पर क्या बोलूँ, क्या कहूँ, भ्रांति यह देह भाव' को सुरों में बाँधा। 1987 में जयदेव की बनाई धुनों पर इसी तरह के दो गीत और संगीतबद्ध किया थे -'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' और 'जो तुम आ जाते एक बार' तथा तीसरा गीत जयशंकर प्रसाद का है-'वे कुछ दिन कितने सुंदर थे'। जयदेव की ये सभी रचनाएँ गीत और संगीत के उत्कृष्ट संगम हैं। सन् 2009 में सीमा सहगल ने मैथिलीशरण गुप्त के काव्य 'यशोधरा' से एक गीत 'सखि वे मुझसे कह कर जाते' को अपना स्वर दिया है। सन् 2014 में एक प्रतिभाशाली संगीतकार राहुल रानाडे ने प्रसाद के 4, दिनकर के 5 और निराला के 4 गीतों को विभिन्न रागों में स्वरबद्ध किया है। इन गीतों में सुरेश वाडेकर, साधना सरगम और डॉ राधिका चोपड़ा जैसी प्रसिद्ध सुरशिल्पियों की मधुर आवाज़ें हैं। एक और संगीतकार केवल कुमार ने भी कवि केदारनाथ अग्रवाल के कुछ गीतों को सुरों से सज्जित किया है। हिन्दी के महान कवियों के गीतों को संगीत में पिरोने के ये सभी प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं।

निष्कर्ष

साहित्य एवं संगीत वास्तव में जीवन की अमूल्य निधियां हैं और एक दूसरे के पूरक हैं। श्रेष्ठ साहित्य जहां सगीत को श्रेष्ठ बनाता है, समाज को नई दिशा प्रदान करता है। वहीं निम्न स्तर का साहित्य, संगीत को निम्न स्तर प्रदान करता है। संगीत से प्रभावित गीत मानवीय भावनाओं के विभिन्न रंग पेश करते हैं। साहित्य व उसके रसानुसार संगीत ने समाज को सदैव ही नवजीवन दिया है और एक सार्थक दिशा प्रदान की है। इस प्रकार साहित्य व संगीत परस्पर पूरक है। सम्पूर्ण वाड्मय पर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि भारतीय साहित्य में संगीत का अत्यन्त श्रेष्ठ संयोजन है।

संदर्भ

1. कुलकर्णी, डॉ.वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, (2013) राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, पृष्ट 18
2. वसंत, संगीत विशारद, (2004) संगीत कार्यालय हाथरस उत्तरप्रदेश, पृष्ठ 522
3. संपादक गर्ग, लक्ष्मी नारायण, संगीत मासिक पत्रिका, अंक जुलाई (1990), संगीत कार्यालय हाथरस उत्तरप्रदेश, पृष्ठ 23